Imam Gazali Ki Sunahri Batein
(Qist : 2) (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 468
Weekly Booklet : 468

इमाम ग़ज़ाली

की सुनहरी बातें (क़िस्त : 2)

(इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब “इह़याउल उ़लूम” से माख़ूज
इ़ल्म, अ़मल, आदाब और बात़िनी इस्लाह़ का ख़ूबसूरत गुलदस्ता)

सफ़ह़ात : (20)

त़ालिबे इ़ल्म के आदाब 02
नूर के 70 ह़िजाबात 06
सब से पहली 4 बिदअ़तें 09
ग़म कम और अ़क़्ल ज़ियादा 14

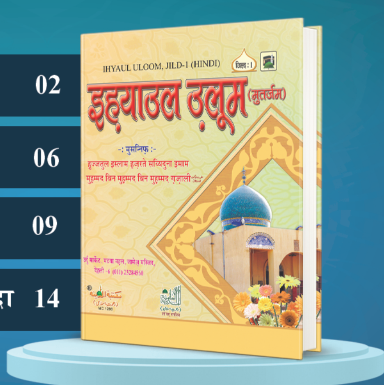

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

इमाम ग़ज़ाली की सुनहरी बातें (क़िस्त : 2)[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "इमाम ग़ज़ाली की सुनहरी बातें" पढ़ या सुन ले उस का दिल दुनिया की मह़ब्बत और गुनाहों की नुहूसत से पाक कर दे और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हि़साब दाख़िला अ़ता फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने शौक़ व मह़ब्बत की वजह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे।

(معجم کبیر، 362/18، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

उ़लमा की अक़्साम

उ़लमा की तीन क़िस्में हैं : ﴾1﴿ जो ख़ुद को भी और दूसरों को भी हलाक करने वाले हैं और येह वोह हैं जो अ़लानिया दुनिया की तरग़ीब दिलाते और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह रहते हैं। ﴾2﴿ जो ख़ुद भी सआ़दतमन्द होते हैं और दूसरों की भी ख़ुशबख़्ती का ज़रीआ़ बनते हैं और येह वोह हैं जो ज़ाहिरो बात़िन में लोगों

1...येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब "इह़याउल उ़लूम (उर्दू) जिल्द : 1" से तय्यार किया गया है।

को अल्लाह पाक की तरफ़ बुलाते हैं। ﴾3﴿ जो ख़ुद हलाक होते हैं मगर दूसरों की सआ़दतमन्दी का ज़रीआ़ बनते हैं और येह वोह हैं जो आख़िरत की तरफ़ बुलाते हैं। येह ब ज़ाहिर तो दुनिया छोड़ चुके होते हैं लेकिन दिल में लोगों में मक़्बूलियत और जाहो ह़श्मत की तमन्ना रखते हैं। (احیاء العلوم، 172/1)

मुश्रिक नापाक हैं

क़ुरआने पाक में है : "बेशक मुश्रिक नापाक हैं" (پ10، التوبۃ:28) उन का बातिन नापाक होता है अगर्चे ज़ाहिर साफ़ हो। (احیاء العلوم، 173/1 ملخصاً)

त़ालिबे इ़ल्म के आदाब

शागिर्द के ज़ाहिरी आदाब : ﴾1﴿ दिल को बुरे अख़्लाक़ और बुरी सिफ़ात से पाक करना। ﴾2﴿ दुनियावी मश्ग़ूलियात से ह़त्तल मक़्दूर बचने की कोशिश करना। ﴾3﴿ इ़ल्म पर तकब्बुर न करना। ﴾4﴿ इब्तिदाअन लोगों के इख़्तिलाफ़ात पर ध्यान न देना। ﴾5﴿ उ़म्दा इ़ल्म के हर फ़न और हर क़िस्म को जानने की कोशिश करना। ﴾6﴿ तरतीबे उ़लूम का लिह़ाज़ रखना और सब से पहले अहम को शुरूअ़ करना। ﴾7﴿ एक फ़न की तक्मील के बाद दूसरे फ़न की तरफ़ मुतवज्जेह होना। ﴾8﴿ अफ़्ज़ल इ़ल्म तक पहुंचाने वाले सबब की मारिफ़त ह़ासिल करना। ﴾9﴿ बातिन की सफ़ाई ﴾10﴿ मक़्सद की जानिब इ़ल्म की निस्बत को जानने की कोशिश करना। (احیاء العلوم، 173/1 تا 185 ملخصاً وملتقطاً)

इ़ल्म को अपना सब कुछ दे दो

इ़ल्म तुम्हें अपना बाज़ उस वक़्त तक न देगा जब तक तुम उसे अपना सब कुछ न दे दोगे और जब तुम अपना सब कुछ उसे दे दोगे तो तुम्हें उस का बाज़ मिल जाएगा। (احیاء العلوم، 176/1)

इ़ल्मो अ़मल की पहचान

इ़ल्म बात़िनी निगाहों से जब कि अ़मल ज़ाहिरी आंखों से देखा जाता है। (احیاء العلوم، 199/1)

उस्ताज़ के आदाब

उस्ताज़ के आदाब : ﴾1﴿ उस्ताज़ शागिर्दों पर शफ़क़त करे और उन्हें अपने बेटों जैसा समझे। ﴾2﴿ उस्ताज़, ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करे और इ़ल्म पर उजरत त़लब न करे। ﴾3﴿ त़ालिबे इ़ल्म को नसीह़त करने में कोई कसर न छोड़े। ﴾4﴿ जिस क़दर मुम्किन हो इशारों, किनायों में शागिर्दों को बुरे अख़्लाक़ से मना करे, सराह़तन न रोके। (बार बार झिड़कने से हैबत ख़त्म हो जाती है) ﴾5﴿ त़ालिबे इ़ल्म के दिल में उस (यानी जो इ़ल्म येह पढ़ा रहा है उस) के इ़लावा दीगर उ़लूम की बुराई न डाले। ﴾6﴿ वोही बातें बताए जिन्हें वोह समझ सके, अ़क़्ल से बाला तर बातें न करे। ﴾7﴿ त़ालिबे इ़ल्म कोताह फ़हम (यानी कम अक़्ल) हो तो उसे वाज़ेह़ बताए जिसे वोह आसानी से समझ सके। ﴾8﴿ उस्ताज़ अपने इ़ल्म पर अ़मल करता हो कि उस के क़ौलो फ़ेल में यक्सानिय्यत हो। (احیاء العلوم، 191/1 تا 199 ملخصاً وملتقطاً)

अ़मल ज़रूरी है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़लील बिन अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "आदमी चार क़िस्म के होते हैं : ﴾1﴿ जो इ़ल्म रखता है और जानता है कि उसे इ़ल्म है, वोह आ़लिम है उस की इत्तिबाअ़ करो। ﴾2﴿ जो इ़ल्म रखता है मगर येह नहीं जानता कि उसे इ़ल्म है, ऐसा शख़्स सो रहा है उसे जगा दो। ﴾3﴿ जिसे इ़ल्म नहीं और वोह जानता है कि उस के पास इ़ल्म नहीं, ऐसा शख़्स हिदायत का त़ालिब है उसे हिदायत दो। ﴾4﴿ वोह शख़्स जिस के पास इ़ल्म नहीं और उसे

मालूम भी नहीं कि उस के पास इ़ल्म नहीं, ऐसा शख़्स जाहिल है उसे छोड़ दो।"

(احیاء العلوم، 203/1)

इ़ल्म अ़मल को पुकारता है

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इ़ल्म अ़मल को पुकारता है वोह सुन ले तो ठीक वरना इ़ल्म चला जाता है। (احیاء العلوم، 203/1)

ख़ुदपसन्दी का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने 10 से ज़ियादा किताबों के बसते और टोकरे दफ़्न कर दिए थे और फ़रमाते थे : मुझे ख़्वाहिश है कि मैं ह़दीस बयान करूं और जब मुझे ह़दीस बयान करने की ख़्वाहिश न रहेगी तो मैं ज़रूर ह़दीस बयान करूंगा। (احیاء العلوم، 210/1)

इख़्लास वाले भी डर रहे हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : जो मुख़्लिस हैं उन्हें ख़ौफ़ है कि न मालूम उन का ख़ातिमा कैसा होगा !

(احیاء العلوم، 210/1، 211)

इ़ल्म तीन हैं

ह़दीसे मुबारका में है : इ़ल्म तीन हैं : ﴾1﴿ क़ुरआने पाक ﴾2﴿ सुन्नते क़ाइमा ﴾3﴿ और येह कहना कि मैं नहीं जानता। (معجم اوسط، 284/1، حدیث:1001)

मै नहीं जानता

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : لَا اَدْرِیْ (यानी मैं नहीं जानता) आधा इ़ल्म है और मालूम न होने की सूरत में जवाब न देने वाला अज्रो सवाब में जवाब देने वाले से कम नहीं क्यूंकि ला इ़ल्मी का एतिराफ़ नफ़्स पर बहुत मुश्किल है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : لَا اَدْرِیْ (यानी मैं नहीं जानता) आ़लिम की ढाल है क्यूंकि अगर उस ने ग़लत़ मस्अला बता दिया तो हलाकत में मुब्तला होगा। (احیاء العلوم، 240/1)

ज़ियादा इ़ल्म वाले की निशानी

हज़रते अबू सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मारिफ़त" (यानी अल्लाह पाक की पहचान) बातचीत से ज़ियादा ख़ामोश रहने के क़रीब है। मन्क़ूल है कि जब इ़ल्म ज़ियादा हो तो गुफ़्तगू कम हो जाती है और जब गुफ़्तगू ज़ियादा हो तो इ़ल्म कम हो जाता है। (احیاء العلوم، 245/1)

सीखे हुए इ़ल्म पर अ़मल की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो अपने इ़ल्म पर अ़मल करता है अल्लाह पाक उसे वोह इ़ल्म भी अ़ता फ़रमा देता है जो उसे ह़ासिल न हो।" (حلیۃ الاولیاء، 13/10، حدیث:14320)

बाज़ पिछली किताबों में लिखा है कि "ऐ बनी इसराईल ! येह न कहो कि इ़ल्म आस्मान पर है उसे कौन ज़मीन पर उतारेगा ? न येह कहो कि इ़ल्म ज़मीन की तह में है उसे ऊपर कौन लाएगा ? न येह कहो कि समुन्दर के उस पार है, समुन्दर पार कर के उसे कौन लाएगा ? बल्कि इ़ल्म तुम्हारे दिलों में रखा गया है। मेरे (यानी अल्लाह पाक के) सामने रूह़ानी आदाब सीखो और नेक बन्दों के अख़्लाक़ अपनाओ, मैं तुम्हारे दिलों में इतना इ़ल्म डाल दूंगा जो तुम्हें ढांप लेगा।" (احیاء العلوم، 247/1)

हुसूले इ़ल्म के ज़रीए

मुसलमान के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : इ़ल्म का अक्सर (ह़िस्सा) (उस पर) अ़मल (करने) और मुजाहदा (यानी कोशिश) पर हमेशगी इख़्तियार करने से ह़ासिल होता है। (احیاء العلوم، 251/1)

अल्लाह देख रहा है

इन्सान तन्हाई में भी अपने तमाम मुआमलात में अदब को उस शख़्स की तरह मल्हूज़े ख़ातिर रखे जो बहुत बड़े बादशाह के सामने बैठा हो और बादशाह उसे देख रहा हो तो वोह गर्दन झुकाए अपने तमाम मुआमलात में बा अदब रहता और ख़िलाफ़े अदब हर बात से बचता है। इसी तरह जब वोह यक़ीन कर ले कि अल्लाह अलीमो ख़बीर उस की ख़ुफ़िया (यानी छुपी) बातों पर इस तरह मुत्तलअ है जैसे मख़्लूक़ उस की ज़ाहिरी बातों पर तो वोह अपने बातिनी मुआमलात में भी इस तरह फ़िक्रमन्द होगा जिस तरह अपने ज़ाहिरी मुआमलात में फ़िक्रमन्द होता है बल्कि बातिन को संवारने, उसे पाकीज़ा रखने और मुज़य्यन करने में उस से ज़ियादा मुबालग़ा करेगा जितना अपने ज़ाहिर को लोगों के लिए मुज़य्यन करने में मुबालग़ा करता है। (احیاء العلوم، 258/1 ملخصاً)

इल्मे नाफ़ेअ

मन्क़ूल है कि "अल्लाह पाक जिस बन्दे को इल्म अता फ़रमाता है उसे हिल्म (यानी बरदाश्त करने की ताक़त), आजिज़ी, अच्छे अख़्लाक़ और नर्मी भी अता फ़रमाता है और येही इल्मे नाफ़ेअ (यानी फ़ायदा पहुंचाने वाला इल्म) है।"

(احیاء العلوم، 260/1)

नफ़्स और जिस्म की मिसाल

नफ़्स सुवार और जिस्म सुवारी की तरह है और सुवार का अन्धा होना सुवारी के अन्धापन से ज़ियादा नुक़्सान देह है। (احیاء العلوم، 295/1)

नूर के 70 हिजाबात

रूह और अल्लाह पाक की सिफ़ात के राज़ को जानना अवाम के बस से बाहर है। येह हदीसे पाक भी शायद इसी तरफ़ इशारा करती है कि अल्लाह

पाक के नूर के 70 हिजाबात (यानी पर्दे) हैं अगर वोह उन्हें हटा दे तो उस की तजल्लियात ता हद्दे निगाह सब कुछ जला दें।

(مسلم،ص94،حدیث:445۔ معجم کبیر،148/6،حدیث:5802مفہوماً)(احیاءالعلوم،334/1)

सत्तर से ज़ियादा दर्जे

ईमान के 70 से ज़ाइद दर्जे हैं जिन में से कमतर, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना है। (احیاءالعلوم،388/1۔ مسلم،ص45،حدیث:153ملتقطاً)

शर्ह : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : पत्थर व ईंट, लकड़ी वग़ैरा जिस से लोग उल्झें या ठोकर खाएं दूर कर देना सवाब है। ऐसे ही मख़्लूक़ को फ़ायदा पहुंचाना बड़ा सवाब है ह़त्ता कि पानी पिलाना, इसी लिए बाज़ लोग सबीलें लगाते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/28)

तारीफ़ पर फूलना

सिल्सिलए आलिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स बाग़ में जाए जहां हर क़िस्म के दरख़्त हों, उन पर हर क़िस्म के परिन्दे हों और हर परिन्दा जुदा ज़बान में उस शख़्स से कलाम करे और कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الله यानी ए अल्लाह के वली ! तुम पर सलामती हो।" येह सुन कर अगर उस का नफ़्स (ख़ुदपसन्दी की वजह से) राह़त मह़सूस करे तो वोह उन परिन्दों का क़ैदी है।

(احیاءالعلوم،392/1۔اتحاف السادۃالمتقین،432/2)

ईमान कब छिन जाता है ?

सह़ाबिए नबी ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाया करते थे कि अल्लाह पाक की क़सम ! जिसे अपने बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ नहीं होता उस का ख़ातिमा बुरा होता है। (احیاءالعلوم،394/1)

सज़ा बुरा ख़ातिमा

मन्क़ूल है कि "बाज़ गुनाहों की सज़ा बुरा ख़ातिमा है।" हम उन से अल्लाह पाक की पनाह मांगते हैं। कहा जाता है कि "वोह गुनाह (जो बुरे ख़ातिमे का सबब बनते हैं) विलायत व करामत का झूटा दावा करना है।" (احیاء العلوم، 394/1)

अल्लाह पाक की ख़ुफ़िया तदबीर व ईमान पर ख़ातिमा

किसी आ़रिफ़ बिल्लाह (यानी अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) का फ़रमान है कि अगर मुझे अपने कमरए ख़ास के दरवाज़े पर ईमान पर मौत मिल रही हो और शहादत सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर मुन्तज़िर हो तो (शहादत अगर्चे आला दर्जे की सआ़दत है मगर) मैं कमरे के दरवाज़े पर मिलने वाली ईमान पर मौत को फ़ौरन क़बूल कर लूंगा कि क्या मालूम इ़मारत के दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते मेरा दिल बदल जाए। (احیاء العلوم، 394/1)

मदनी फूल : दिल को "क़ल्ब" इसी लिए कहते हैं कि येह जब देखो मुन्क़लिब हो जाता यानी बार बार बदलता रहता है, रात को दिल में आता है कि कल से ख़ूब इ़बादतें और रियाज़तें करूंगा मगर सुब्ह़ को येही दिल बदल कर गुनाहों के दलदल में डाल देता है। कभी दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा से कपकपी त़ारी हो जाती और आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं तो कभी गुनाहों की ऐसी ज़िद चढ़ जाती है कि अल अमान वल ह़फ़ीज़। दिल भी कभी तोला है तो कभी माशा। काश ! ईमान की ह़िफ़ाज़त के जज़्बे पर इस्तिक़ामत मिलती। सद करोड़ काश ! आ़फ़ियत के साथ ईमान पर मौत की तड़प को दुनिया में आसान ज़िन्दगी गुज़ारने के अरमान पर सबक़त ह़ासिल हो जाती।

(कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 13)

पाकी के 4 दर्जे

पाकी के 4 दर्जे हैं : ﴾1﴿ ज़ाहिर को नापाकियों, नजासतों वग़ैरा से पाक करना ﴾2﴿ आज़ा को जराइम और गुनाहों से पाक करना ﴾3﴿ दिल को बुरे अख़्लाक़ और ना पसन्दीदा आदतों से पाक करना ﴾4﴿ बातिन को अल्लाह पाक के ग़ैर से पाक रखना और येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और सिद्दीक़ीन (यानी औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) की पाकीज़गी है। (احیاء العلوم، 397/1)

सब से पहली 4 बिदअ़तें

मन्क़ूल है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद सब से पहले चार बिदअ़तें ज़ाहिर हुईं : ﴾1﴿ छलनी ﴾2﴿ उशनान (एक क़िस्म की बूटी जो साबुन की त़रह सफ़ाई का काम देती है) ﴾3﴿ ऊंचे दस्तरख़्वान (यानी टेबल वग़ैरा) ﴾4﴿ पेट भर कर खाना। (احیاء العلوم، 398/1)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : उशनान का इस्तिमाल अच्छा है क्यूंकि सफ़ाई के लिए धोना मुस्तह़ब है और उशनान से सफ़ाई ज़ियादा ह़ासिल होती है। रहा येह कि उस वक़्त (ज़ाहिरी ज़मानए रिसालत में) उशनान इस्तिमाल न किया जाता था तो उस की येह वुजूहात हो सकती हैं : ❀ उस ज़माने में इस की आ़दत न थी ❀ या मुयस्सर न था ❀ या वोह ऐसे कामों में मश्ग़ूल थे जो (ज़ाहिरी) सफ़ाई में मुबालग़ा से ज़ियादा अहम थे और उन (यानी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का ऐसा करना धोने के मुस्तह़ब में रुकावट नहीं।

(दूसरी बिदअ़त) आटा छान कर पकाने से खाने को अच्छा करना मक़्सूद है और येह मुबाह़ (यानी इस का करना और न करना दोनों जाइज़) है। टेबल पर खाना भी मुबाह़ है जब कि ग़ुरूरो तकब्बुर से न हो और पेट भर कर खाना येह उन में सब से सख़्त है क्यूंकि येह ख़्वाहिशात में हैजान (यानी ह़रकत) और दवा के अस्बाब पैदा करता है।

तम्बीह : याद रहे ! दसतरख़्वान पर खाना खाना अगर्चे औला है मगर टेबल, कुर्सी पर खाना नाजाइज़ या मकरूह नहीं । येह जो कहा गया है कि चार चीज़ें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद पैदा हुईं तो इस से उन का मम्नूअ़ होना हरगिज़ साबित नहीं होता बल्कि क़ाइदा येह है कि "वोह बिदअ़त (यानी नया काम) मना है जो साबित शुदा सुन्नत के ख़िलाफ़ और शरीअ़त के किसी काम को ख़त्म करने वाला हो जब कि उस का सबब बाक़ी हो ।" बाज़ औक़ात जब अस्बाब बदल जाएं तो नया काम शुरूअ़ करना वाजिब होता है और मेज़ पर खाना सिर्फ़ इस लिए रखा जाता है कि खाना ऊंचा हो जाए ताकि खाने में आसानी रहे और इस तरह के कामों में कराहिय्यत नहीं होती ।

(احیاء العلوم، 2/13)

कानों की सफ़ाई

ग़ुस्ल ख़ाने से निकल कर कान के सूराख़ वाली मैल को दूर किया जाए बाज़ औक़ात येह समाअ़त (यानी सुनने की ताक़त) को नुक़्सान पहुंचाती हैं ।

(احیاء العلوم، 1/431)

नाख़ुनों के मैल को "उफ़" और कानों के नीचे के मैल को "तुफ़" कहा जाता है । इरशादे ख़ुदावन्दी है : (پ15، بنی اسرائیل:23) ﴿فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ﴾ इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि वालिदैन को इतनी भी तक्लीफ़ न दो जितनी तुम नाख़ुनों के मैल कुचैल से महसूस करते हो । (احیاء العلوم، 1/434)

राहे आख़िरत का मुसाफ़िर

राहे आख़िरत का मुसाफ़िर जब भी किसी चीज़ को देखता है तो वोह उस के लिए नसीहत और आख़िरत की याद बन जाती है । (احیاء العلوم، 1/438)

अल्लाह को ताक़ पसन्द है

ताक़ को जुफ़्त पर फ़ज़ीलत हासिल है क्यूंकि "अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی वित्र (यानी ताक़) है और ताक़ को पसन्द फ़रमाता है।" लिहाज़ा ऐसा नहीं होना चाहिए कि बन्दे का कोई काम अल्लाह पाक के औसाफ़ में से किसी वस्फ़ से मुनासबत न रखता हो। (जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दाईं आंख मुबारक में तीन और बाईं आंख में (सुर्मा लगाते वक़्त) दो सलाइयां लगाते थे ताकि मज्मूआ (यानी टोटल) ताक़ हो जाए।)[1] (احیاء العلوم، 1/443)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : अगर कहा जाए कि (सुर्मा लगाते वक़्त) बाएं आंख में दो पर क्यूं इक्तिफ़ा किया गया ? हालांकि येह जुफ़्त है तो उस का जवाब येह है कि ऐसा ज़रूरत के तहत किया गया है क्यूंकि हर आंख में ताक़ अदद में लगाने से उस का मज्मूआ जुफ़्त हो जाता। क्यूंकि ताक़ और ताक़ मिल कर जुफ़्त हो जाते हैं और मुकम्मल काम के मज्मूए में ताक़ का ख़याल रखना एक एक में ताक़ का ख़याल रखने से बेहतर है। (احیاء العلوم، 1/444)

मोमिन का नूर

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़ेद बालों को उखेड़ने से मना फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : هُوَ نُوْرُ الْمُؤْمِن यानी येह मोमिन का नूर है। (احیاء العلوم، 1/451)

शर्ह : सफ़ेद बाल उखेड़ना सियाह ख़िज़ाब के माना में है और उस के मकरूह होने की इल्लत गुज़र चुकी है नीज़ सफ़ेद बाल अल्लाह पाक की तरफ़ से नूर है और इन से मुंह फेरना नूरे इलाही से मुंह फेरना है। (احیاء العلوم، 1/451)

1...सुर्मा इस्तिमाल करने के तीन मन्क़ूल तरीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : ﴾1﴿ कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां ﴾2﴿ कभी दाएं (सीधी) आंख में तीन और बाएं (उल्टी) में दो, ﴾3﴿ तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुर्मे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइए। (شعب الایمان، 5/218-219) (550 सुन्नतें और आदाब, स. 38)

दो परवाने

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो कोई अल्लाह पाक के लिए चालीस दिन तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े उस के लिए दो आज़ादियां लिखी जाएंगी, एक नार से दूसरी निफ़ाक़ से।

(احیاء العلوم، 1/464-ترمذی، 1/274،حدیث:241)

शर्हे ह़दीस : ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : यानी इस अ़मल की बरकत से येह शख़्स दुनिया में मुनाफ़िक़ीन के आमाल से मह़फ़ूज़ रहेगा, उसे इख़्लास नसीब होगा, क़ब्रो आख़िरत में अ़ज़ाब से नजात पाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/211)

तक्बीरे तह़रीमा फ़ौत हो जाने का ग़म

मन्क़ूल है कि बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم में से किसी की तक्बीरे ऊला (बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ते हुए पहली तक्बीर) फ़ौत हो जाती तो तीन दिन अफ़सोस करते और अगर जमाअ़त फ़ौत हो जाती तो सात दिन अफ़सोस करते।

(احیاء العلوم، 1/464)

तक्बीरे ऊला नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त कही जाने वाली सब से पहली तक्बीर (यानी अल्लाहु अकबर कहने) को कहते हैं, इस को "तक्बीरे तह़रीमा" भी कहा जाता है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 191)

दुआ़एं ज़ियादा मांगो

सह़ाबिए नबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि "बन्दा अल्लाह पाक से ज़ियादा क़रीब सज्दा करते हुए होता है तो उस में दुआ़एं ज़ियादा मांगो।"

(احیاء العلوم، 1/467)

सात चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से

ह़दीसे मुबारका में है कि नमाज़ में सात चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से हैं :

﴾1﴿ नक्सीर फूटना ﴾2﴿ ऊंघ आना ﴾3﴿ वस्वसा आना ﴾4﴿ जमाही आना ﴾5﴿ खुजाना ﴾6﴿ इधर उधर तवज्जोह करना और ﴾7﴿ किसी चीज़ से खेलना।

(احیاء العلوم، 1/490)

मशक़्क़त के सिवा कुछ न मिला

रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : और बहुत से क़ियाम करने वाले ऐसे हैं कि उन को उन के क़ियाम से सिवाए जागने के कुछ ह़ासिल नहीं होता। (احیاء العلوم، 1/496-ابنِ ماجہ، 2/320، حدیث:1690)

नमाज़ मुकम्मल करने वाले बातिनी उमूर

﴾1﴿ हुज़ूरे क़ल्ब ﴾2﴿ फ़हम ﴾3﴿ ताज़ीम ﴾4﴿ हैबत ﴾5﴿ रजा ﴾6﴿ ह़या।

(احیاء العلوم، 1/501)

मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : नमाज़ का कमाल, नमाज़ का नूर, नमाज़ की ख़ूबी फ़हम व तदब्बुर व हुज़ूरे क़ल्ब (यानी ख़ुशूअ़) पर है। (फ़तावा रज़विय्या, 6/205) मत़लब येह कि आला दर्जे की नमाज़ वोह है जो ख़ुशूअ़ के साथ अदा की जाए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 282)

आंखों का क़ुफ़्ले मदीना

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमेशा सर और आंखें झुकाए रखते थे ह़त्ताकि बाज़ लोग आप को नाबीना समझते। आप 20 साल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللهُ عَنْه के घर हाज़िर होते रहे, जब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللهُ عَنْه की कनीज़ उन्हें (आते) देखतीं तो अ़र्ज़ करतीं : "आप के नाबीना दोस्त तशरीफ़ लाए हैं।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللهُ عَنْه उस की बात सुन कर मुस्कुरा देते।

हज़रते रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ जब दरवाज़ा बजाते, कनीज़ बाहर निकलतीं तो उन्हें सर और आंखें झुकाएं देखतीं। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को इस त़रह़ देखते तो फ़रमाते : ख़ुदा की क़सम ! अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें देखते तो तुम से ख़ुश होते। एक रिवायत में है कि आप को पसन्द फ़रमाते। एक रिवायत में है कि आप को देख कर मुस्कुरा देते। (احیاء العلوم، 1/529)

60 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आ़दिल बादशाह का एक दिन 60 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल है।" (معجم کبیر، 11/227، حدیث:11932۔ احیاء العلوم، 1/537بتغیر)

मुख़्तसर नमाज़

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो मुख़्तसर पढ़ाए क्यूंकि उन में कमज़ोर, बूढ़े और काम काज वाले भी होते हैं। (مسلم، ص192، 193، حدیث:1046-1050)(احیاء العلوم، 1/545)

शर्ह़ : नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ से मुराद ऐसी नमाज़ है जो मुख़्तसर भी हो और उस के अरकान, वाजिबात और सुनन मुकम्मल भी हों, येह मत़लब नहीं कि مَعَاذَ اللّٰہ ! नमाज़ के अरकान ही पूरे अदा न हों जैसा कि मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : हल्की नमाज़ (यानी इख़्तिसार) से येह मुराद नहीं कि सुन्नतें छोड़ दें या अच्छी त़रह़ अदा न करें बल्कि मुराद येह है कि नमाज़ के अरकान दराज़ न करे बक़दरे किफ़ायत अदा करे जैसे रुकूअ़ सज्दे की तस्बीहें तीन बार कहे। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/203)

आदाबे जुमुआ

﴾1﴿ जुमेरात से ही जुमुआ की तय्यारी करे, अ़स्र के बाद दुआ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हो जाए क्यूंकि येह जुमुए की घड़ी के मुक़ाबिल वक़्त है। ﴾2﴿ ज़ीनत इख़्तियार करना। ﴾3﴿ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना। ﴾4﴿ मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब। ﴾5﴿ ह़ाज़िरीन का अदब। ﴾6﴿ पहली सफ़ की कोशिश करना। ﴾7﴿ ख़ुत़्बे के आदाब ﴾8﴿ नमाज़े जुमुआ के आदाब। ﴾9﴿ मस्जिद में ठहरे रहना। (احیاء العلوم، 1/557تا573)

ग़म कम और अ़क़्ल ज़ियादा

करोड़ों शाफ़ेइ़यों के इमाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो ख़ुश्बू लगाए उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होगा। (احیاء العلوم، 1/561)

तीन आमाल

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन अ़मल ऐसे हैं अगर लोग जान लें कि इन में क्या अज्र है तो उन्हें पाने के लिए ऊंटों पर सुवार हो जाएं : ﴾1﴿ अज़ान ﴾2﴿ सफ़े अव्वल और ﴾3﴿ जुमुआ के लिए जल्दी जाना। (احیاء العلوم، 1/562)

दीदारे इलाही

कहा जाता है कि अल्लाह पाक के दीदार के वक़्त सब से ज़ियादा क़ुर्ब उन लोगों को ह़ासिल होगा जो सवेरे सवेरे नमाज़े जुमुआ के लिए जाते हैं।

(احیاء العلوم، 1/563)

सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ (एक बार रोज़े जुमुआ) सुब्ह़ सवेरे जामेअ़ मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो तीन आदमियों को मौजूद

पाया जो जल्दी करने में उन से पहल ले गए थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़मगीन हो गए।

(احیاء العلوم، 1/564)

सारा हफ़्ता शैतान से हिफ़ाज़त

जब जुमुआ से फ़ारिग़ हो तो बग़ैर कलाम किए सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़्लास और मुअव्वज़तैन (यानी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) सात सात बार पढ़े। बाज़ बुज़ुर्गों رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم से मन्क़ूल है कि जिस ने ऐसा किया वोह एक जुम्आ से दूसरे जुमुआ तक महफ़ूज़ रहा और येह उस के लिए शैतान से बचाव है।

(احیاء العلوم، 1/571)

मख़्लूक़ से बे नियाज़ी और हुसूले रिज़्क़ की दुआ

जुमुआ के बाद येह कहना भी मुस्तहब है : "اَللّٰھُمَّ یَاغَنِیُّ یَاحَمِیۡدُ یَامُبۡدِئُ یَامُعِیۡدُ یَارَحِیۡمُ یَاوَدُوۡدُ اَغۡنِنِیۡ بِحَلَالِكَ عَنۡ حَرَامِكَ وَبِفَضۡلِكَ عَمَّنۡ سِوَاكَ यानी ऐ अल्लाह पाक ! ऐ ग़नी ! ऐ ह़म्द वाले ! ऐ इब्तिदाअन पैदा करने वाले ! ऐ (रोज़े क़ियामत) लौटाने वाले ! ऐ रह़म फ़रमाने वाले ! ऐ मह़ब्बत करने वाले ! मुझे अपने ह़लाल के साथ ह़राम से और अपने फ़ज़्ल के साथ मासिवा से बेनियाज़ कर दे।"

मन्क़ूल है कि जो इस पर हमेशगी इख़्तियार करे अल्लाह पाक उसे मख़्लूक़ से बेनियाज़ कर देता और उसे वहां से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहां से उसे गुमान भी नहीं होता। (احیاء العلوم، 1/572)

जुमुआ का पूरा दिन (आमाले) आख़िरत के लिए मुक़र्रर कर दे और दुनियावी मशग़ूलियात से रुक जाए, औरादो वज़ाइफ़ की कसरत करे। (احیاء العلوم، 1/583)

नमाज़े बा जमाअत की फ़ज़ीलत

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : नमाज़ में अपने भाइयों को न पाओ तो उन्हें तलाश करो।

अगर बीमार हों तो उन की इ़यादत करो। अगर तन्दुरुस्त हों तो उन्हें झिड़को। झिड़कने से मुराद जमाअ़त छोड़ने पर तम्बीह करना है और इस में सुस्ती नहीं करनी चाहिए। (احیاء العلوم، 1/593)

ज़ोहर की चार सुन्नतों की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने ज़वाल के बाद चार रकअ़तें पढ़ीं उन में अच्छी त़रह़ क़िराअत की और रुकूअ़ो सुजूद किया उस के साथ 70 हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते और रात तक उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। (احیاء العلوم، 1/596)

सब से अच्छा अ़मल

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे थोड़ा हो। (مسلم، ص307، حدیث:1828۔ احیاء العلوم، 1/626)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दाइमी अ़मल अगर्चे थोड़ा हो अच्छा है और आ़रज़ी अ़मल अगर्चे ज़ियादा हो उतना अच्छा नहीं। सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि दुरूदो वज़ाइफ़ शुरूअ़ कर के छोड़े नहीं, जब ज़बान बन्द हो और मौत आए तब येह आमाल बन्द हों, इन का माख़ज़ येह ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/263)

घर आने जाने के वक़्त नफ़्ल पढ़ना

घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त दो रकअ़त नफ़्ल (पढ़ना मुस्तह़ब) है। मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम अपने घर से निकलो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लो येह तुम्हें बुरे निकलने से बाज़

रखेंगी और जब घर में दाख़िल हो तो दो रकअ़त पढ़ लो येह तुम्हें बुरे दाख़िले से महफ़ूज़ रखेंगी। (احیاء العلوم،1/627-شعب الایمان،3/124،حدیث:3078)

हर काम शुरूअ़ करने में अल्लाह पाक के नाम से बरकत ह़ासिल कीजिए

इमाम ग़ज़ाली رَحمَۃُاللہِ عَلَیہ लिखते हैं : बाज़ सालिह़ीने किराम رَحمَۃُاللہِ عَلَیہِم (यानी अल्लाह पाक के नेक बन्दे) जब कुछ खाते या पानी पीते तो दो रकअ़तें पढ़ते। इसी त़रह़ उन्हें जो मुआ़मला भी पेश आता उस वक़्त दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते। इस के तीन दर्जे हैं :

﴾1﴿ बाज़ काम कई बार किए जाते हैं जैसे खाना पीना तो इन का आग़ाज़ तस्मिया (यानी बिस्मिल्लाह) से किया जाए कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भी अहम काम بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।" (جامع صغیر، ص391،حدیث:6284بتغیرٍ قلیلٍ)

﴾2﴿ कई काम ऐसे हैं जो बार बार नहीं किए जाते लेकिन वोह अहम होते हैं। जैसे निकाह़ करना और नसीह़त व मश्वरे की इब्तिदा। इस सूरत में मुस्तह़ब येह है कि अल्लाह पाक की ह़म्द से शुरूअ़ करे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنۡھُم की आ़दत थी कि कोई पैग़ाम भेजते या नसीह़त और मश्वरा करते तो ह़म्दे इलाही से आग़ाज़ करते।

﴾3﴿ जिस अ़मल में तकरार तो नहीं होता लेकिन जब किया जाए तो देर पा होता है गोया वोह भी अहम काम होता है। जैसे सफ़र करना, नया घर ख़रीदना, एह़राम बांधना या इस जैसे दीगर आमाल। लिहाज़ा इन से पहले दो रकअ़तें पढ़ना मुस्तह़ब है। इस का सब से कम दर्जा घर से निकलना और दाख़िल होना है क्यूंकि येह भी क़रीबी सफ़र की एक क़िस्म है। (احیاء العلوم،1/628)

बुख़्ल का इलाज

बुख़्ल की आदत यूं ख़त्म हो सकती है कि इन्सान माल ख़र्च करने का आदी हो जाए क्यूंकि किसी चीज़ की महब्बत इसी सूरत में ख़त्म हो सकती है कि इन्सान उस के छोड़ने पर नफ़्स को मजबूर करे यहां तक कि वोह उस की आदत बन जाए। (احیاء العلوم، 1/653)

छुपा कर नफ़्ली सदक़ात करने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

उलमाए किराम के एक गिरोह ने छुपा कर (नफ़्ली) सदक़ा देने में मुबालग़ा (यानी हद से ज़ियादा अन्दाज़ इख़्तियार) किया यहां तक कि उन्हों ने कोशिश की, कि सदक़ा लेने वाला देने वाले को न पहचान सके। उन में से बाज़ तो नाबीना के हाथ में सदक़ा देते, बाज़ फ़क़ीर के रास्ते में डाल देते और उस के बैठने की जगह रख देते जहां से वोह देख लेता लेकिन देने वाला नज़र न आता, बाज़ सोए हुए फ़क़ीर के कपड़े में बांध देते, बाज़ किसी दूसरे के हाथ फ़क़ीर की तरफ़ भेज देते ताकि वोह देने वाले को न जाने और कह देते कि उसे हमारे बारे में न बताए।

(احیاء العلوم، 1/656)

मालदार का राहे ख़ुदा में माल ख़र्च न करने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काबए मुशर्रफ़ा के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा तो मुझे देख कर इरशाद फ़रमाया : "रब्बे काबा की क़सम ! वोह ख़सारा पाने वाले हैं।" मैं ने अर्ज़ की : वोह कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया :

“कसरते मालो दौलत वाले मगर वोह लोग जो अपने आगे पीछे, दाएं बाएं इस तरह़ उस त़रह़ ख़र्च करें और ऐसे लोग बहुत कम हैं और जो ऊंट, गाय और बकरी का मालिक ज़कात अदा नहीं करता तो वोह जानवर बरोज़े क़ियामत पहले से ज़ियादा मोटे ताज़े हो कर आएंगे, उसे अपने सींगों से मारेंगे और खुरों से रौंदेंगे जब आख़िरी गुज़र जाएगा तो पहला दोबारा आ जाएगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।” (احیاء العلوم، 1/636- مسلم، ص385، حدیث:3200)

क़ुत़्बुल औलिया, शैख़ अ़ब्दुल्लाह ऐ़दरूस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने कई साल इह़याउल उ़लूम का मुत़ालआ़ किया और एक ह़र्फ़ को बार बार पढ़ा और इस में ग़ौरो फ़िक्र किया तो हर दिन मेरे सामने बड़े बड़े राज़ और इ़ल्म ज़ाहिर हुए जो पहले मुझे ह़ासिल न थे, अगर अल्लाह पाक फ़ौत शुदा लोगों को ज़िन्दा कर दे तो वोह ज़िन्दा लोगों को सिर्फ़ इन बातों की वसिय्यत करें जो इह़याउल उ़लूम में हैं। (احیاء العلوم، 5/359)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर “इह़याउल उ़लूम” किताब के एक एक सफ़ह़े को मुलाह़ज़ा फ़रमा कर फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! येह तो बहुत अच्छी है। इसी त़रह़ शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने भी देखा और येही फ़रमाया : नीज़ एक साह़िब जो इस किताब का रद करते थे उन को सज़ा दी गई। (احیاء العلوم، 1/25 ملخصًا)

अगले हफ़्ते का रिसाला

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025